The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Special Issue 1 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

गुरूकुल परंपरा और आज की शिक्षा में प्रासंगिकता

प्रीति पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक, देव संस्कृति कॉलेज, खपरी, धमधा रोड, दुर्ग (छ.ग.)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18797871

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 16-01-2026

Published: 05-02-2026

Keywords:

गुरुकुल,आधुनिक शिक्षा, नैतिक मूल्य, गुरु–शिष्य परंपरा, भारतीय शिक्षा दर्शन।

ABSTRACT

भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली का आधार गुरूकुल परंपरा थी, जहा¡ शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का साधन न मानकर जीवन निर्माण का माध्यम समझा जाता था । गुरूकुलों में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य शिष्य के चारित्रिक, नैतिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को सुनिश्चित करना था। शिक्षा गुरू के सानिध्य में प्राकृतिक वातावरण में दी जाती थी, जहा¡ शिष्य आत्मनिर्भरता अनुशासन, सेवा, सत्य,करूणा, सहिष्णुता और कर्तव्यनिष्ठा जैसे जीवन–मूल्यों को आत्मसात करता था। वर्तमान की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य रोजगार प्राप्त करना एवं भौतिक उन्नति माना जाने लगा है। यद्यपि आधुनिक शिक्षण पद्धति ने विज्ञान, तकनीक और वैश्विक दृष्टिकोण के माध्यम से समाज को अनेक सुविधाएं प्रदान की है, परंतु इसके साथ ही नैतिकता, गुरू–शिष्य संबंध की आद्वियता, जीवन मूल्य और चरित्र निर्माण जैसे गुण धीरे–धीरे तुप्त होते जा रहे हैं। ऐस में गुरूकुल पंरपरा के सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक है, जितने प्राचीन काल में थे । यदि आधुनिक शिक्षा में गुरूकुल की प्रमुख विशेषताएं जैसे गुरू–शिष्य का घनिष्ठ संबंध, नैतिकता और संस्कारों पर बल, व्यवहारिक शिक्षा, अनुशासन और आत्मसंयम का प्रशिक्षण सम्मिलित किये जाएं तो शिक्षा अधिक संतुलित, मानवीय और जीवनोन्मुखी बन सकती है। इस प्रकार गुरुकुल परंपरा न केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर है, बल्कि वह आज की शिक्षा प्रणाली को नैतिक दिशा, मानवता और आत्मविकास की भावना प्रदान कर सकती है। तकनीकी प्रगति और आध्यात्मिक शिक्षा का संयोजन ही भविष्य की शिक्षा प्रणाली को पूर्णतः प्रदान करेगा।

प्रस्तावना :– भारत की सांस्कृतिक विरासत में शिक्षा का स्थान सर्वोपरि रहा है। भारतीय समाज में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन के आदर्शों, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्वों को समझने का साधन मानी जाती रही है। भारतीय शिक्षा दर्शन का मुख्य उद्देश्य ''सर्वांगीण विकास'' रहा है। अर्थात् ऐसा विकास जो व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से पूर्ण बनाए। इस दृष्टि से यदि देखा जाए तो भारत की गुरुकुल परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और उत्कृष्ट शिक्षा प्रणालियों में से एक रही है। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा का आधार गुरु और शिष्य के बीच गहरा आत्मीय संबंध था। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि व्यवहारिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर भी उतना ही बल दिया जाता था। विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर आत्मनिर्भरता, सेवा भावना, अनुशासन, संयम और परिश्रम के गुणों को अपने जीवन का हिस्सा बनाते थे। गुरु, शिष्य के जीवन का मार्गदर्शक होता था, जो उसे केवल विषय ज्ञान ही नहीं, बल्कि **''कैसे जीना है''** यह भी सिखाता था। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति निर्माण का माध्यम थीए न कि केवल आजीविका का साधन।

आधुनिक युग में जब विज्ञान, तकनीक और वैश्वीकरण ने शिक्षा के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया हैए तब यह प्रश्न उठता है कि क्या आज की शिक्षा प्रणाली अपने मूल उद्देश्य, चरित्र निर्माण और मूल्यपरक जीवन, को पूरा कर पा रही है, वर्तमान शिक्षा प्रणाली में तकनीकी दक्षता, व्यावसायिकता और प्रतिस्पर्धा को अधिक महत्व दिया जा रहा हैए जबकि नैतिकताए गुरु.शिष्य संबंध, जीवन मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे तत्व धीरे–धीरे कमजोर होते जा रहे हैं। शिक्षा अब एक व्यापक व्यापारिक उद्योग के रूप में देखी जाने लगी हैए जहाँ विद्यार्थियों को केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने और नौकरी प्राप्त करने की मानसिकता के साथ तैयार किया जा रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में गुरुकुल परंपराश् की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। आज की शिक्षा को केवल आधुनिक तकनीक से नहींए बल्कि भारतीय जीवन दर्शन और सांस्कृतिक मूल्यों से भी जोड़े जाने की आवश्यकता है। गुरुकुल प्रणाली यह सिखाती थी कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक प्रगति नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर सत्य, धर्म, करुणा, सहिष्णुता और सेवा भाव जैसे मानवीय गुणों का विकास करना है।

गुरुकुल प्रणाली का स्वरूप :–

1. **गुरु–शिष्य संबंध :–** शिक्षा का आधार गुरु और शिष्य का आत्मीय संबंध था। गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, पालक और चरित्र निर्माता होता था ।
2. **आवासीय शिक्षा :–** विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। इससे उनमें अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सामूहिकता की भावना विकसित होती थी।
3. **समग्र विकास :–** शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं था, बल्कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास भी समान रूप से आवश्यक माना गया।
4. **नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर बल** :–. गुरुकुल शिक्षा का केन्द्र धर्मश् और कर्तव्य था। शिक्षा जीवन को संस्कारयुक्त बनाती थी।

5. **व्यवहारिक जीवन कौशल :–** विद्यार्थियों को कृषि, पशुपालन, धनुर्विद्या, चिकित्सा, राजनीति, साहित्य, संगीत और खगोल जैसे विषयों का व्यवहारिक ज्ञान दिया जाता था।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली का स्वरूप :– आधुनिक शिक्षा प्रणाली औद्योगीकरण, तकनीकी विकास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। यह ज्ञान को सुलभ, उपयोगी और वैश्विक बनाने का कार्य करती है, किंतु इसकी सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इससे नैतिकता और जीवन मूल्यों का अभाव होता जा रहा है। भारत का आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास उपनिवेशिक काल से आरंभ होकर स्वतंत्र भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों तक विस्तृत है। यह प्रणाली विज्ञान, तकनीक, मानवाधिकार, वैश्वीकरण और सामाजिक परिवर्तन से निरंतर प्रभावित होते रही है। आधुनिक शिक्षा का स्वरूप ज्ञान, कौशल, नवाचार और उद्यमिता पर आधारित हो गया है। यद्यपि इसमें समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रोजगार के अवसरों का विस्तार किया है किंतु मानवीय मूल्यों, नैतिकता, और गुरू शिष्य संबंधों की कमी ने इसे अधूरा बना दिया है ।

औद्योगीकरण और तकनीकी विकास पर आधारित शिक्षा :– आधुनिक शिक्षा प्रणाली औद्योगिक युग की उपज है। इसमें विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाता है कि वे औद्योगिक, तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों में कार्य करने के योग्य बन सकें। कम्प्यूटर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल लर्निंग और ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्म ने शिक्षा को वैश्विक और सुलभ बना दिया है।

उदाहरण :– स्मार्ट क्लास, ऑनलाइन शिक्षण, ई–लर्निंग और डिजिटल पुस्तकालय, किन्तु इस तकनीकी उन्नति ने मानवीय संवाद, गुरू–शिष्य की आत्मीयता और सामूहिक अध्ययन की परंपरा को कमजोर किया है।

ज्ञान से अधिक प्रमाण पत्र प्रधानता :– आधुनिक शिक्षा में ज्ञान की अपेक्षा डिग्री और प्रमाण पत्रों को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य रोजगार प्राप्ति बन गया है, जबकि पहले ''जीवन जीने की कला'' थी। इसी प्रवृत्ति के कारण छात्र परीक्षा केन्द्रित बन गए है और रचनात्मकता तथा मानवीयता का ह्रास हो रहा है।

व्यवसायिकता और प्रतिस्पर्धा :– आज की शिक्षा व्यवस्था में ''रोजगार योग्यता'' और ''प्रतिस्पर्धात्मकता'' मुख्य धुरी बन चुकी है। निजी विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के शिक्षा को एक व्यावसायिक उद्योग का रूप दे दिया है। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संबंध अब व्यावहारिक से अधिक औपचारिक हो गया है, यह प्रवृत्ति शिक्षा के नैतिक और सांस्कृतिक पक्ष को प्रभावित कर रही है।

गुरु शिष्य का अभाव :– आधुनिक शिक्षा में नैतिकता, करुणा, सहिष्णुता और सेवा भावना जैसे गुणों की कमी हुई है। विद्यार्थी ज्ञानवान बन रहे है, परंतु संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिक नहीं बन पा रहे हैं। गुरुकुल परंपरा में जहाँ शिक्षा का आधार ''धर्म और चरित्र'' था, वहीं आज ''प्रतिस्पर्धा और लाभ'' ने उसका स्थान ले लिया है।

वैश्वीकरण और बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण :– आधुनिक शिक्षा का एक सकारात्मक पक्ष यह है कि उसने वैश्विक दृ ष्टिकोण और सांस्कृतिक सह.अस्तित्व को बढ़ावा दिया है। विद्यार्थी अब केवल अपने देश तक सीमित नहीं रहे, बल्कि विश्व नागरिक के रूप में सोचने लगे हैं। यह वैश्विक चेतना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, किन्तु इसका संतुलन तभी संभव है जब विद्यार्थी अपनी जड़ों से भी जुड़ा रहे।

छात्र केंद्रित शिक्षण :– आधुनिक शिक्षा में अब धीरे–धीरे छात्र को शिक्षण का केंद्र बनाया जा रहा है। शिक्षण में प्रोजेक्ट कार्य प्रश्नोत्तरी एवं संवाद आधारित पद्धतियाँ अपनाई जा रही हैं। यह एक सकारात्मक परिवर्तन है, क्योंकि इससे विद्यार्थियों में आत्म–निर्णय और समस्या समाधान की क्षमता विकसित होता है।

सामाजिक समानता और समावेशिता :– आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों, दलित, पिछड़ा वर्ग, दिव्यांग और अल्पसंख्यक को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना है। NEP 2020 में भी समावेशी शिक्षा, बहु.भाषिकता और भारतीय ज्ञानपरंपरा को प्रमुखता दी गई है।

शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियाँ :– आधुनिक शिक्षा ने कई प्रगतियाँ की है, फिर भी कुछ गंभीर चुनौतियाँ बनी हुई हैं :–

- **शिक्षा का व्यावसायिकरण**
- **परीक्षा केंद्रित प्रणाली**
- **शिक्षक की घटती भूमिका**
- **नैतिकता का अभाव**
- **विद्यार्थियों में तनाव और आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति**

गुरुकुल परंपरा की आधुनिक युग में प्रासंगिकता :– गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आत्मा थी । उसका मुख्य उद्देश्य केवल ''ज्ञानार्जन'' नहीं बल्कि ''जीवन निर्माण'' था। वर्तमान युग में जब शिक्षा भौतिकवादी, प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी ज्ञान और करियर केंद्रित हो गई है, तब गुरुकुल परंपरा के मूल सिद्वांत पुनः प्रासंगिक हो उठे हैं। आधुनिक शिक्षा को केवल तकनीकी प्रगति से नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनशीलता और नैतिक मूल्यों से भी जोड़ना आवश्यक है। गुरुकुल को शिक्षा की ''मनुष्य को मनुष्य बनाना'' सिखाती थी यही दृष्टि आज की शिक्षा प्रणाली में पुर्नस्थापित करने की आवश्यकता है ।

नैतिक शिक्षा का पुर्नस्थापन :– गुरुकुल शिक्षा का आधार ''सदाचार और धर्म'' था । विद्यार्थी को जीवन के हर क्षेत्र में सत्ता, अनुशासन, करूणा, ईमानदारी और आत्मसंयम का पालन किया जाता था। वर्तमान की शिक्षा में भौतिक सफलता तो नहीं है नैतिक पतन भी उतना ही गहरा हुआ है । समाज में बढ़ती हिंसा, भ्रष्टाचार असहिष्णुता और मानसिक तनाव इस बात का प्रमाण है कि शिक्षा में मूल्यहीनता बढ़ रही है। अतः गुरूकुल परंपरा से प्रेरित मूल्यपरक शिक्षा को पुनः शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाना अत्यंत आवश्यक है।

गुरु – शिष्य संबंध की पुर्नस्थापन :– गुरुकुल प्रणाली में गुरु और शिष्य का संबंध आत्मीयता, सम्मान और आस्था पर आधारित था। गुरु न केवल विषय शिक्षक था, बल्कि जीवन मार्गदर्शक और आचार्य का भी था। आधुनिक युग में यह संबंध औपचारिक और सीमित हो गया है। डिजिटल शिक्षा और ऑनलाइन लर्निंग ने संवाद को मशीनों तक सीमित कर दिया है। यदि अत्याधुनिक शिक्षा में फिर से गुरु–शिष्य की आत्मीयता और संवाद पर आधारित वातावरण स्थापित हो सके, तो शिक्षा अधिक जीवंत और प्रभावी बनेगी।

समग्र विकास की अवधारणा :– गुरुकुल शिक्षा केवल बौद्धिक विकास पर केंद्रित नहीं थी, उसका उद्देश्य शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास था। आज की शिक्षा प्रणाली में अधिकतम ध्यान ''परीक्षा और करियर'' पर होता है, जबकि जीवन कौशल और भावनातमक संतुलन की शिक्षा उपेक्षित है। गुरूकुल की समग्र दृष्टि यह सीखती है कि शिक्षा का अर्थ ''संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण'' है । यह अवधारणा आधुनिक शिक्षा में समावेशित की जानी चाहिए ।

आत्मनिर्भरता और श्रम की गरिमा :– गुरुकुल जीवन में विद्यार्थी दैनिक कार्य स्वयं करते थे, जैसे भोजन बनाना, सफाई करना, जल लाना आदि। इससे उनमें आत्मनिर्भरता, विनम्रता और श्रम की गरिमा की भावना विकसित होती थी। आज की शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी सुविधाभोगी बनते जा रहे हैं, जिससे उनमें आत्मनिर्भरता कम हो रही है। गुरुकुल से प्रेरणा लेकर शिक्षा में कार्य.अनुभव आधारित शिक्षण को शामिल करना समय की आवश्यकता है।

पर्यावरण और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता :– गुरुकुल जीवन प्रकृति के सान्निध्य में व्यतीत होता था । विद्यार्थी प्रकृति को ''माता'' मानकर उसका संरक्षण करते थे। आधुनिक शिक्षा में यदि यह पर्यावरणीय दृष्टि अपनाई जाए, तो छात्र न केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पर्यावरण की रक्षा करेंगे, बल्कि उसके प्रति श्रद्धा भी विकसित करेंगे। अब जब जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण जैसे समस्याएं बढ़ रही है, गुरूकुल की प्रवृत्ति नित्य शिक्षा अत्यंत प्रासंगिक बन जाती है ।

जीवन कौशल और आचार संहिता :– गुरुकुल शिक्षा में विद्यार्थियों को जीवन के व्यवहारिक कौशल सिखाए जाते थे, जैसे सहयोग, समय प्रबंधनए योजनाए निर्णय क्षमताए और आत्मविश्वासद्ध आवश्यक शिक्षा में इन नैतिक कौशलों को शामिल करना आवश्यक है ताकि विद्यार्थी केवल ज्ञानी नहीं, बल्कि संवहनीय और जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

भारतीयता और संस्कृतिक चेतना :– गुरुकुल शिक्षा भारतीय दर्शन, संस्कृति भाषा और परंपराओं पर आधारित थी। यह विद्यार्थियों में अपने देश, समाज और संस्कृति के प्रति गर्व की भावना उत्पन्न करती थी। आज की शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी प्रभाव अधिक दिखाई देता है । इसलिए गुरुकुल परंपरा के माध्यम से विद्यार्थियों में भारतीयता, स्वाभिमान और सांस्कृतिक चेतना का संचार किया जा सकता है।

सामाजिक सेवा और उत्तरदायित्व :– गुरुकुल शिक्षा में विद्यार्थियों को समाज की सेवा करने का संस्कार दिया जाता था। शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि समाज कल्याण था। आधुनिक शिक्षा में यदि ''सेवा

भावना'' और ''सामाजिक उत्तरदायित्व'' के तत्वों को शामिल किया जाए, तो शिक्षा अधिक मानवीय और राष्ट्र निर्माण में सहायक बन सकती है।

आध्यात्मिकता और मानसिक संतुलन :– गुरुकुल शिक्षा में ध्यान, योग, साधना और आत्मचिंतन को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। ये सभी अभ्यास विद्यार्थियों के मानसिक संतुलन और आत्मबल को बढ़ाते थे। आज के प्रतिस्पर्धी और तनावपूर्ण वातावरण में, विद्यार्थियों के लिए यह आध्यात्मिक शिक्षा अत्यंत उपयोगी है। यह न केवल मानसिक स्वास्थ्य को सुधारती है, बल्कि आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच भी विकसित करती है।

गुरूकुल और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक विश्लेषण :–

पहलु	गुरूकुल प्रणाली	आधुनिक शिक्षा प्रणाली
उद्देश्य	आत्मज्ञान और चरित्र निर्माण	रोजगार और तकनीकी दक्षता
शिक्षा का माध्यम	मौखिक, व्यवहारिक	तकनीकी, संस्थागत
गुरू–शिष्य संबंध	आत्मीय और व्यक्तिगत	औपचारिक और सीमित
मूल्य–दृष्टि	नैतिकता, सेवा, संयम	प्रतिस्पर्धा, व्यवहारिक
शिक्षाइ का वातावरण	प्राकृतिक, आश्रम आधारित	औद्योगिक, संस्थागत
परिणाम	समग्र व्यक्तित्व विकास	व्यवसायिक दक्षता

इस तुलना से स्पष्ट है कि जहा¡ आधुनिक शिक्षा ज्ञान और तकनीक पर आधारित है, वहीं गुरूकुल प्रणाली मानवीय मूल्यों और आत्मज्ञान पर केन्द्रित थी ।

निष्कर्ष और सुझाव :– गुरुकुल और आधुनिक शिक्षा दोनों ही अपने–अपने काल की आवश्यकताओं के अनुसार उपयोगी रही हैं। जहाँ गुरुकुल शिक्षा ने व्यक्ति की जीवन मूल्यों और आत्मज्ञान से समृद्ध किया, वहीं आधुनिक शिक्षा ने उसे तकनीकी, दक्षता और वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान की। आज की आवश्यकता है कि दोनों प्रणालियों के श्रेष्ठ तत्वों का समन्वय किया जाए। शिक्षा में नैतिकता, योग, पर्यावरण चेतना और जीवन कौशल को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ा जाए, ताकि शिक्षा ''मानव निर्माण'' का माध्यम बने न कि केवल ''रोजगार निर्माण'' का। इस प्रकार भारतीय शिक्षा प्रणाली पुनः अपने मूल आदर्श ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' को साकार कर सकती है।

गुरूकुल परंपरा भारतीय शिक्षा प्रणाली की एक ऐसी सुदृढ़ और मूल्य आधारित व्यवस्था रही है, जिसमें शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं बल्कि जीवन निर्माण की प्रक्रिया माना गया । इस परंपरा में गुरू शिष्य का संबंध अत्यंत आत्मीय, अनुशासित एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित था, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास, शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक संभव हो पाता था। गुरूकुल परंपरा के सिद्धांत आज भी पूर्णतः है । यदि

आधुनिक शिक्षा में गुरूकुल की मूल भावना जैसे गुरू शिष्य संवाद, संस्कार आधारित शिक्षा,व्यवहारिक जीवन कौशल, सेवाभाव और आत्मसंयम को समाहित किया जाये तो शिक्षा अधिक संतुलित मानव केन्द्रित और जीवन उपयोगी बन सकती है । अतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक तकनीकी शिक्षा और गुरूकुल परंपरा का समन्वय ही भविष्य की एक आदर्श और समग्र शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकता है, जो न केवल योग्य पेशेवर बल्कि संस्कारवान और जिम्मेदार नागरिक की कल्याण करें ।

सुझाव :–

- आधुनिक पाठ्यक्रम में नैतिक और मूल्य आधारित शिक्षा को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाये ।
- शिक्षक और विद्यार्थी के बीच गुरू शिष्य जैसे आत्मीय संबंध विकसित किया जाये ।
- शिक्षा में व्यवहारिक व जीवन कौशल और अनुभवात्मक शिक्षण पर अधिक बल दिया जाये ।
- विद्यालयों में योग, ध्यान और संस्कार शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये ।
- तकनीकी शिक्षा के साथ–साथ मानवीय और आध्यात्मिक विकास को भी महत्व दिया जाये ।

संदर्भ सूची :–

- मनुस्मृति – भारतीय शिक्षा एवं सामाजिक मूल्यों का स्रोत।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद – प्राचीन भारतीय शिक्षा के मूल आधार।
- उपनिषद – गुरु–शिष्य परंपरा एवं आध्यात्मिक शिक्षा का दार्शनिक विवेचन।
- राधाकृष्णन, एस. (2008) – भारतीय दर्शन । नई दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स।
- शर्मा, रामनाथ (2010) – भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास। आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
- अग्रवाल, जे. सी. (2012) – शिक्षा का दर्शन और समाजशास्त्र। नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस।
- पांडेय, रामशकल (2011) – भारतीय शिक्षा की परंपरा। वाराणसी, चौखंभा प्रकाशन।
- माधवन, टी. के. (20) – प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली। दिल्ली, अटल पब्लिशर्स।